Shri mrd arts & eelk commerce college , chikhli

semester – 4

hindi paper – 10 (hindi sahity ka. Etihas

Topic- भारतेन्दु युगीन काव्य की प्रमुख प्रवुतियाँ

p

pt- डॉ. रियाज़ ताई . हिन्दी विभाग ।

पूर्व भूमिका : आधुनिक काल का आरंभ भारतेन्दु के समय से हुआ है। भारतेन्दु हरिश्चंद्र अपने युग के प्रमुख साहित्यकार थे । उसकी बहुआयामी साहित्य।सेवा के आधार पर इस युग का नाम उनके ही नाम पर किया गया । भारतेन्दु युगीन कवियों की हिन्दी काव्य रचनाओं का फलक अत्यंत विस्तृत है । इस युग में गद्य साहित्य का सुंदर विकास हुआ है । गद्य की विविध विधाए इस युग में एक प्रेरक रूप में विकसित हुई है । भारतेन्दु युग की प्रमुख विशेषताऐ निम्नलिखित है ।

- १ – राष्ट्रीयता : भारतेन्दु युग की राजनीति में देशभक्ति की प्रबल धारा विद्यमान है । ऐसी ही भावधारा तत्कालीन काव्य में मिलती है । इस काल की कविता में यदि विदेशी शासन के प्रति रोष है , तो प्राचीन भारतीय आदर्श पर गर्व है । भारतेन्दु जी की पंक्तियाँ इस बात का प्रमाण है । जैसे – " अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी,   पै धन विदेश चलि जात यहै अति ख्व़ारि ।
- इस काल के कवि भारतीय राजनीति , धार्मिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक भावनाओं के अनुकूल उत्कर्ष देखना चाहते हैं । अतित के प्रेरक प्रसंगों को प्रस्तुत कर कवि नवयुवकों में नये भाव जाग्रत करना चाहते हैं । भारतेन्दु , प्रेमधन , आदि की कविताओं में देशभक्ति की प्रबल भावना व्यक्त हुई हैं ।

- २* सामाजिक चेतना : भारतेन्दु युग के साहित्य ने समाज की विभिन्न समस्याओं को व्यापक रूप में प्रस्तुत करने की सराहनीय भूमिका अदा की है
- नारी शिक्षा , अस्पृश्यता , और विधवा विवाह का मार्मिक चित्रण तत्कालीन कविताओं में मिलता है ।
- इस युग की कविताओं में एकतरफ मध्यम वर्गीय समाज की विषमताओं का चित्रण किया गया है , तो दूसरी तरफ समाज की रूढ़ियों और अंधविश्वासों का विरोध किया गया है ।
- सुधारवादी दृष्टिकोण इस काल की कविता की मुख्य विशेषता है ।
- भारतेन्दु ने " अंधेरनगरी " , " भारत दुर्दशा " नाटक में वर्ण व्यवस्था का खुलकर विरोध किया है ।
- "बहुत हमने फैलाए धर्म , बढ़ाया छुआछूत का कर्म।"

- ३* भक्तिभावना : भारतेन्दु युग में भक्तिभावना का सीमित और सामान्य रूप विद्यमान है । इस. काल की भक्तिभावना संबंधी रचनाएं भक्ति काल की रचनाओं से अलग है । ऐसी रचनाओं में भक्ति और देशप्रेम को एक ही धरातल पर प्रस्तुत किया गया है । जिसमें संवेदना का प्रबल रूप दिखाई देता है । इस काल की भक्ति में निर्गुण वैष्णव और स्वदेशी राग समन्वित तीन धाराएं मिलती है ।

- ४* श्रृंगारिकता : भारतेन्दु युग में रस को काव्य की आत्मा मानकर रचना की जाती रही ह़ै । श्रृगार रस विविध रंगों के साथ सर्वत्र विद्यमान ह़ै । कृष्ण संदर्भ में तो सौन्दर्य और श्रृंगार का वर्णन अत्यंत प्रभावशाली हो गया ह़ै । इस काल की श्रृंगार भावना में संक्षिप्त नखशिख वर्णन है और षड़ऋतु वर्णन और नायिका भेद के साथ उर्दू और अंगेजी की संवेदना और अभिव्यंजना भी प्रकट हुई है ।

५ * प्रक्कुति – चित्रण : भारतेन्दु युगीन कविता में प्रक्रूति सौन्दर्य का स्वछंदरूप मिलता है । प्रक्रूति के मादयम से नायक – नायिकाओं की मनोदशाका सुंदर चित्रण किया गया है । प्रक्रूति के विभिन्न द्दश्यों के चित्रण में इस काल के कवि का सराहनीय रूप प्रस्तुत हुआ है । प्रक्रूति का हराभरा रूप , वीरान रूप , उत्प्रेरक रूप , विभिन्न कविताओं में अपनी विशेषताओं के साथ प्रस्तुत हुआ है ।

- ६* काव्य रूप : भारतेन्दु युग की प्रायः सभी रचनाएँ मुक्तक काव्य पर आधारित है। ' हरिनाथ पाठक की ललित रामायण ' और प्रेमधन की ' जीर्ण – जनपद ' आदि कुछ एक प्रबंध रचनाएँ अपवाद रुप है। इस युग के ज्यादातर कवियों ने गीत , लोकगीत , और विनोद से संबंधित रचनाओं को मुक्तक में ही प्रस्तुत किया है।
- भारतेन्दु जैसे कुछ कवियों ने गज़ल के रुप में रचनाएं प्रस्तुत की है।
- इस युग का काव्य परंपरागत मुक्तकों के साथ नवीन प्रयोग भी सामने आया है।
- इस काल में काव्य के साथ गध्य की निबंध , समीक्षा , उपन्यास , कहानी , नाटक ' आदि विधाओं का सुंदर विकास हुआ है।

- समापन : भारतेन्दु युग की प्रवुतियॉ को देखने के बाद यह स्पष्ट रूप से कहा जा सकता है कि यह हिन्दी साहित्य का नवजागरण काल है , जिसमें राष्ट्रीयता , सामाजिकता और भाषीय प्रेम की अनुपम त्रिवेणी बहती है ।